**NEWS**

**ICAR-Central Institute for Research on Cattle, Meerut**

**28.01.2023**

# DDG (Animal Science) visits ICAR-Central Institute for Research on Cattle, Meerut

डॉ. बी.एन. त्रिपाठी, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), भा.कृ.अनु.प, नई दिल्ली ने 28 अक्टूबर, 2022 को भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ में पधारे। उनके साथ डॉ. अमरीश कुमार त्यागी, एडीजी (पशु पोषण और शरीर विज्ञान, डॉ. ए.के. तोमर, निदेशक, आईसीएआर- केंद्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर और डॉ. आर्जव शर्मा, पूर्व निदेशक, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान ने भी संस्थान का दौरा किया।

उप महानिदेशक डॉ त्रिपाठी ने किसानों द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सतत विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। वह वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, विस्तार विशेषज्ञों, किसानों और पशुपालकों के प्रयासों के लिए आभारी थे जिन्होंने भारत को भूख और कुपोषण से मुक्त देश बनाया है। उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों की सराहना की और सभी से बेहतर कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने पशुपालन के विभिन्न घटकों के गहन वैज्ञानिक विश्लेषण का भी आग्रह किया।

डॉ. ए.के. त्यागी, एडीजी ने वांछित विकास प्राप्त करने के लिए भा.कृ.अनु.प. और किसानों के बीच सहक्रियात्मक अंतःक्रिया के लाभों के बारे में बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पशुओं के बेहतर आहार से उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिल सकती है। डॉ. ए.के. तोमर ने किसानों को भेड़ और खरगोशों को एकीकृत करने की संभावनाओं से अवगत कराया।

गायों की गिर नस्ल के विकास के संबंध में ICAR-CIRC और ICAR-CSWRI, अविकानगर के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए।

इससे पहले, डॉ. उमेश सिंह, निदेशक, केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान ने अपने स्वागत भाषण में डीडीजी और गणमान्य व्यक्तियों को संस्थान के बुनियादी ढांचे के विकास की प्रगति, अनुसंधान और क्षमता-निर्माण के कार्य क्षेत्रों में की जा रही गतिविधियों, भविष्य की योजनाओं और कार्यक्रमों से अवगत कराया।

कार्यक्रम का आयोजन डॉ. एस के वर्मा (प्रधान विज्ञान) एवं नोडल अधिकारी, अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) द्वारा किया गया था। उन्होंने वांछित विकास प्राप्त करने में एससीएसपी सहयोगियों और किसानों के बीच सहक्रियात्मक बातचीत के लाभों को रेखांकित किया।

कार्यक्रम में किसानों को पशुधन प्रबंधन, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन, पशु उत्पादन के महत्वपूर्ण पहलुओं और प्रजनन प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी भी दी गई। वैज्ञानिकों-किसानों के बीच संवाद भी आयोजित किया गया। किसानों को खनिज मिश्रण, यूएमएमबी ब्लॉक, तिरपाल, पावर विनोवर जैसे आदानों के वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम में करीब 100 किसानों ने भाग लिया।

Dr. B. N. Tripathi, Deputy Director General (Animal Science), ICAR, New Delhi, visited the ICAR-Central Institute for Research on Cattle, Meerut, on 28 October, 2022. The Deputy Director General was accompanied by Dr. Amrish Kumar Tyagi, ADG (Animal Nutrition & Physiology, Dr. A. K. Tomar, Director, ICAR- Central Sheep and Wool Research Institute, Avikanagar and Dr. Arjav Sharma, Ex-Director, ICAR-CIRC & ICAR-NBAGR.

The DDG highlighted the importance of sustainable development to achieve the self-reliance by the farmers. He was grateful for the efforts of scientists, researchers, extension specialists, farmers, and livestock owners who have made India a country free from hunger and malnutrition. He praised the institute's achievements and exhorted everyone to do better work. He also urged upon in-depth scientific analysis of different components of cattle farming.

Dr. A. K. Tyagi, ADG, explained the benefits of synergistic interaction between ICAR and farmers to achieve the desired development. He emphasized that better feeding of animals can help increase productivity. Dr. A. K. Tomar, Director, ICAR-CSWRI, apprised farmers about the possibilities of integrating sheep and rabbits.

A Memorandum of Understanding (MoU) was also signed between ICAR-CIRC, Cattle and ICAR-CSWRI, Avikanagar regarding the development of the Gir breed of cattle.

Earlier, in his welcome address, Dr. Umesh Singh, Director, ICAR-CIRC, apprised the DDG and dignitaries about the progress of the Institute’s infrastructure development, major action areas in research and capacity building, research activities being undertaken, future plans and programmes.

The event was organised by Dr. Dr S K Verma (Principal Sci) and Nodal officer, Schedules Caste Sub-Plan (SCSP). He outlined the benefits of synergistic interaction between the SCSP associates and the farmers in achieving the desired development.

In the programme, farmers were also provided with knowledge on various aspects of livestock management, cattle health management, important aspects of cattle production and reproductive management. A Scientists-Farmers interaction was also held. The programme ended with the distribution of inputs such as mineral mix, UMMB block, Tirpal, Power Winnower to farmers. Nearly 100 farmers participated in the event.